Training & Demonstration Programme on
"Sustainable utilization, conservation and cultivation of medicinal plants"
held at Himalayan Forest Research Institute Panthaghati Shimla
from 13th to 15th, October 2016 : A Report

Himalayan Forest Research Institute, Shimla organized three days training and demonstration programme on **"Sustainable utilization, conservation and cultivation of medicinal plants"** for various stakeholders, at Himalayan Forest Research Institute Panthaghati Shimla from dated 13th to 15th, October, 2016. About 20 participants from members of Gram Panchyats, Krishi Vigyan Kendra, representatives from NGO's, Mahila Mandals and frontline staff from Chopal Forest Division were present during this training.

Sh. Jagdish Singh, Scientist-F, Coordinator of the said training programme, formally welcomed all the participants and presented details of the three days training cum demonstration programme.

Dr. VP Tiwari, Director HFRI, as a chief guest, inaugurated the programme on 13th October 2016. In his inaugural address, he informed that the state of Himachal Pradesh has been bestowed with rich medicinal plants wealth and has tremendous scope to make it a source of income generation activity on sustainable basis by taking up commercial cultivation of high valued medicinal plants. He further added that due to heavy biotic pressure, some of the important temperate medicinal plants are at the verge of their extinction and accordingly suggested that one of the way to protect and conserve these valuable medicinal plants is to integrate them in the hill farming, which certainly will ease out the pressure in the natural habitat, besides ensuring quality material to pharmaceutical companies.

Just after the inaugural address **Dr. KS Kapoor, Group Coordinator Research,** made brief presentation on various activities of the Institute followed by **Dr. Vaneet Jishtu, Scientist-C,** who made a comprehensive presentation on 'Uses and identification of important medicinal plants'. Subsequently **Dr. Sandeep Sharma**, **Scientist-F** gave detailed presentation on the 'Commercial cultivation of selected high valued temperate medicinal plants', Vermi-composting and Compost making and discussed various improvements that could be done in traditional compost making. **Sh. Jagdish Singh, Scientist-F,** made presentation on the topic viz. 'Intercropping of temperate medicinal plants with horticultural plantation and Identification of superior genetic stock and sustainable harvesting of important temperate medicinal plants'. Thereafter, **Sh Pitamber Negi Scientist** made a detailed presentation about various aspects of artificial regeneration technique of *Juniperus polycarpus*.

During the **second day** of the training programme a Field Visit was organized to Western Himalaya Temperate Arboratum (WHTA), Potter Hill, Shimla, where a practical demonstration on macro-proliferation techniques for mass multiplication of important medicinal plants, specific nursery & cultivation techniques for production of Ashtavarga and other medicinal plants were given. Subsequently methodology of vermin-composting and compost preparation in the nursery along with preparation of cutting, grafting, polyhouse production etc to the participants were also demostrated. General forestry practices were also demonstrated to the participants. In the end, an

interactive session was held to concentrate upon the various queries of the participants regarding practical demonstration of various above mentioned techniques.

On **third day** of training programme, **Sh. Pradeep Bhardwaj, DCF** delivered a lecture on 'Marketing of Medicinal Plants' and various issues involved in export of medicinal plants. **Dr. Ranjeet Singh, Scientist**, discussed about the Management of Insect pest in important medicinal plant in H.P. **Dr. Joginder Chauhan, Research Officer** made a very interesting presentation on 'Importance of ethno-botany in traditional health care' with special reference to Himalayan region. **Sh. Jagdish Singh, Scientist-F** later delivered a talk on 'Harvesting and post harvesting of important temperate medicinal Plants'.

During the plenary session of the training, all the participants freely interacted with the experts. The relevant queries of the participants were duly addressed through expert opinion of all resource persons.

In the end certificates were distributed to the participants and special Vote of Thanks was extended by the Course Coordinator of the training programme.

………………………………………………………………………

Glimpses of training programme on 'Sustainable utilization, conservation and cultivation of medicinal plants'

हि.व.अ.सं.
HFRI

हि.व.अ.सं.
HFRI

हि.व.अ.सं.
HFRI

& Education)
खेती

& Education)
a-171 009 (H
खेती
आयोजक

INSTITUTE
ducation)
खेती

Panthaghati, Shimla-171 009 (H.P.)
और औषधीय पौधों
प्रदर्शन कार्यक्रम
आयोजक : अकाष्ठ वन

FROM THE PRESS

प्रदेश | amarujala.com | अमर उजाला | चंडीगढ़, शुक्रवार, 14 अक्टूबर 2016 | 9

न्यूज डायरी

औषधीय पौधों की खेती के फायदे बताए

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने औषधीय पौधों की खेती विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। वन विभाग अनुसंधान परियोजना के तहत वित्त पोषित इस योजना के तहत कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश के फलदार एवं वानिकी पौधों के बीच औषधीय पौधों की खेती विषय पर प्रस्तुति दी गई। वैज्ञानिक जगदीश सिंह ने फलदार एवं वानिकी पौधों के मध्य औषधीय पौधों की खेती और डॉ. विनीत जिष्टू ने महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की पहचान एवं उपयोग की जानकारी दी। इससे पहले प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ वीपी तिवारी ने किया। तिवारी ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के जरिये हिमाचल प्रदेश की विलुप्ति की कगार पर पहुंच चुकी कई बहुमूल्य जड़ी बूटियों को बढ़ावा देने की कोशिश की जाएगी। साथ ही किसानों को इन पौधों की खेती के जरिये होने वाले फायदे के बारे में भी बताया जाएगा। इस प्रशिक्षण शिविर में कांगड़ा, हमीरपुर, शिमला, चौपाल तथा विभिन्न सरकारी गैर सरकारी संगठनों से 20 लोगों ने भाग ले रहे हैं।

दैनिक भास्कर | सिटी डायरी | शिमला, शुक्रवार 14 अक्टूबर, 2016 | 2

प्रदेश में जड़ी बूटियों का संरक्षण कर बचाव जरूरी

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से करवाया जा रहा शिविर, 15 अक्टूबर तक चलेगा

सिटी रिपोर्टर | शिमला

तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम में मौजूद समन्वयक व अन्य।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से हिमाचल प्रदेश वन विभाग द्वारा अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत, सतत उपयोग, संरक्षण और औषधीय पौधों की खेती विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हो गया है। 13 से 15 अक्टूबर तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन पंथाघाटी शिमला में किया जा रहा है।

कार्यक्रम के समन्वयक जगदीश सिंह ने कहा कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से सभी प्रतिभागियों का इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का विस्तृत ब्यौरा दिया तथा संस्थान में चल रही अनुसंधान संबंधी गतिविधियों की भी जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उन्होंने हिमाचल प्रदेश के फलदार एवं वानिकी पौधों के मध्य औषधीय पौधों की खेती विषय पर प्रस्तुति दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने कहा कि हिमाचल प्रदेश कई बहुमूल्य जड़ी बूटियों संपन्न प्रदेश है। परंतु भारी जैविक एवं अजैविक दबाव के कारण कई बहुमूल्य जड़ी बूटियां लुप्त होने के कगार पर है। उन्होंने आगे कहा कि हम इन जड़ी बूटियों का संरक्षण एवं बचाव कर सकते हैं तथा इसके द्वारा किसानों की आमदनी में भी बढ़ावा किया जा सकता है। इसके उपरांत संस्थान के समूह समन्वयक अनुसंधान डॉ. केएस कपूर ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं इसके कार्यक्षेत्र के बारे में प्रशिक्षणार्थियों को विस्तृत जानकारी दी।

उन्होंने आगे बताया कि संस्थान द्वारा वानिकी के क्षेत्र में किए गए अनुसंधान कार्यों को हित धारकों तक पहुंचाना भी एक प्रमुख प्रक्रिया है। इसमें डॉ. संदीप शर्मा, डॉ. विनीत जिष्टू, डॉ. कुलराज सिंह कपूर के अलावा शिविर में कांगड़ा, हमीरपुर, शिमला, चौपाल तथा विभिन्न सरकारी गैर सरकारी संगठनों से आए हुए लगभग 20 लोग भाग ले रहे हैं।

6 हिमाचल दस्तक | शिमला सिटी | www.himachaldastak.com | शिमला, शुक्रवार 14 अक्टूबर, 2016

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में औषधीय पौधों की खेती पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आगाज वीरवार को हुआ। कार्यक्रम के समन्वयक एवं वैज्ञानिक जगदीश सिंह ने हिमाचल प्रदेश के फलदार एवं वानिकी पौधों के मध्य औषधीय पौधों की खेती विषय पर प्रस्तुति दी।

प्रशिक्षण शिविर ....

शिमला : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा वित्त पोषित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत सतत और औषधीय पौधों की खेती विषय पर आयोजित प्रशिक्षण शिविर की अध्यक्षता करते कार्यक्रम के समन्वयक वैज्ञानिक जगदीश सिंह

दिव्य हिमाचल Fri, 14 October 2016
epaper.divyahimachal.com/c/13960648

पंथाघाटी में जड़ी बूटियों पर बांटा ज्ञान

- दिव्य हिमाचल ब्यूरो, शिमला

- औषधीय पौधों की खेती के प्रशिक्षण शिविर में वैज्ञानिकों ने साझा की जानकारियां
- कल तक चलेगा कार्यशाला का दौर

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला व हिमाचल प्रदेश वन विभाग द्वारा वित्तपोषित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत, 'सतत उपयोग, संरक्षण और औषधीय पौधों की खेती' विषय पर 13 से 15 अक्तूबर तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन पंथाघाटी शिमला में किया जा रहा है।

कार्यक्रम के समन्वयक जगदीश सिंह, वैज्ञानिक ने सर्वप्रथम निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से सभी प्रतिभागियों का इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का विस्तृत ब्यौरा दिया और संस्थान में चल रही अनुसंधान संबंधी गतिविधियों की भी जानकारी दी। इस दौरान उन्होंने हिमाचल के फलदार एवं वानिकी पौधों के मध्य औषधीय पौधों की खेती विषय पर प्रस्तुति दी और महत्त्वपूर्ण औषधीय पौधों की पहचान एवं उपयोग की जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए निदेशक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला डा. वीपी तिवारी ने कहा कि हिमाचल प्रदेश कई बहुमूल्य जड़ी बूटियों से समृद्ध प्रदेश है, परंतु भारी जैविक एवं अजैविक दबाव के कारण कई बहुमूल्य जड़ी-बूटियां लुप्त होने के कगार पर है। उन्होंने कहा कि कृषिकरण द्वारा हम इन जड़ी-बूटियों का संरक्षण एवं बचाव कर सकते हैं तथा इसके द्वारा किसानों की आमदनी में भी बढ़ावा किया जा सकता है। उन्होंने अवगत करवाया कि संस्थान द्वारा गत वर्षों में औषधीय जड़ी-बूटियों के प्रचार एवं प्रसार के लिए अनेकों प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न हितधारकों के लिए आयोजित किए गए। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को औषधीय पौधों की खेती करने के बारे में जागरूक करना और उनके लिए नर्सरी तकनीक का विकास, व्यवसायिकरण व भंडारण सहित उचित जानकारी उपलब्ध करवाना है।

इसके बाद संस्थान के समूह समन्वयक अनुसंधान डा. केएस कपूर ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं इसके कार्यक्षेत्र के बारे में प्रशिक्षणार्थियों को विस्तृत जानकारी दी। वैज्ञानिक डा. संदीप शर्मा द्वारा विभिन्न विषय जैसे कि बहुमूल्य जड़ी-बूटियों की खेती तथा वर्मी-कंपोस्ट व कंपोस्ट बनाने की विधियों पर विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर डा. वनीत जिष्टू ने हिमाचल में पाए जाने वाले प्रमुख औषधीय पौधों की पहचान, भौगोलिक वितरण एवं उपयोग पर विस्तृत जानकारी दी।

दिव्य हिमाचल Fri, 14 October 2016
epaper.divyahimachal.com

औषधीय पौधों की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ

शिमला, 13 अक्तूबर (जस्टा): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा आयोजित विपेशित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत सतत् उपयोग, संरक्षण और औषधीय पौधों की खेती विषय पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ डा. वी.पी. तिवारी निदेशक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने किया। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश कई बहुमूल्य जड़ी-बूटियों से विकसित प्रदेश है, परन्तु भारी जैविक एवं अजैविक दबाव के कारण कई बहुमूल्य जड़ी-बूटियां लुप्त होने के कगार पर हैं। उन्होंने कहा कि कृषिकरण द्वारा हम इन जड़ी-बूटियों का संरक्षण एवं बचाव कर सकते हैं तथा इसके द्वारा किसानों की आमदनी में भी बढ़ावा किया जा सकता है।

सतत उपयोग, संरक्षण-औषधीय पौधों की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

आपका फैसला ब्यूरो

शिमला, 13 अक्तूबर। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा हि.प्र. वन विभाग द्वारा अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत सतत उपयोग, संरक्षण और औषधीय पौधों की खेती विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम के दौरान कार्यक्रम के समन्वयक वैज्ञानिक जगदीश सिंह ने सर्वप्रथम निदेशक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से सभी प्रतिभागियों का इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का ब्योरा दिया तथा संस्थान में चल रही अनुसंधान संबंधी गतिविधियों की भी जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उन्होंने प्रदेश के फलदार एवं वानिकी पौधों के मध्य औषधीय पौधों की खेती विषय पर प्रस्तुति दी। इसके पश्चात जगदीश सिंह ने फलदार एवं वानिकी पौधों के मध्य औषधीय पौधों की खेती वैज्ञानिक डा. विनित जिष्टू ने महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की पहचान एवं उपयोग की जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. वीपी तिवारी ने अपने संबोधन में कहा कि प्रदेश कई बहुमूल्य जड़ी-बूटियों से संपन्न प्रदेश है, परंतु भारी जैविक एवं अजैविक दबाव के कारण कई बहुमूल्य जड़ी-बूटियां लुप्त होने के कगार पर है। इन जड़ी-बूटियों का संरक्षण एवं बचाव कर सकते हैं तथा इसके द्वारा किसानों की आमदनी में भी बढ़ावा किया जा सकता है।